जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड
सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५६ वे ❖ अंक ८ वा ❖ एप्रिल २०२५ ❖ वीर संवत २५५१ ❖ विक्रम संवत २०८१

या अंकात — पान नं.

- दिव्य साधक जीवन — २३
- तीर्थंकर महावीर का पुरुषार्थ — ३०
- कव्हर तपशील — ३३
- अभय प्रभावना — ३५ ते ४४
- जैन समाज जागृती अभियान — ४५
- नफरत V/S प्यार — ४६
- आओ जानें कसे बने वर्धमान से महावीर — ४७
- भक्ति भक्त भगवान — ४८
- एकता बना सहयोग — ५१
- आधुनिक युग और भगवान महावीर — ५६
- अहिंसा, क्षमा, परोपकार और भ. महावीर — ६७
- प्रेरक कहानियाँ — ६९
- आओ दुर्ध्यान छोडे : ५ मान-ध्यान — ७०
- भगवान महावीरांची अष्ट आचार सूत्री — ७५
- अक्षय तृतीया : आनंदाचं दान देणारा — ७७
- उत्तम श्रावक — ७९
- जैन संगती / जैन वाचना — ८०
- माँ की महिमा — ८१
- तीर्थंकर महावीर का मानवजाती को अवदान — ९१
- कम अपेक्षा - अधिक आनंद — ९५
- विश्व स्वास्थ्य दिन — ९७
- कुशल संघटक श्री. संजयजी नहार — ९९
- मंदिराची घंटा ते शाळेची घंटा — १०१
- सुख-दुःख दोनों में समभाव रखें — १०४
- बैंक बेलेन्स — १०५
- बिन जाने कित जाऊँ-प्रश्नोत्तरी प्रवचन — ११५
- पारस उद्योग समुह - अॅवार्ड — ११८
- मराठी साहित्य संमेलनाचे माझे अध्यक्ष - एक फँटसी — ११९
- प्रोफेशनल टॅक्स रद्द करावा — १२१
- अखण्ड णमोकार गीत — १२३
- पाच तीन दोन:जगण्याचा नवा दृष्टीकोण — १२४
- जिन शासन के चमकते हीरे — १२६

- जैन ध्वज – झण्डा ऊँचा रहे हमारा १२९
- मंत्राधिराज प्रवचन सार १३९
- पासवर्ड – Password १४२
- ऐसी हुई जब गुरुकृपा : चाकरी कर १४३
- मन की साधना : मन ही मोक्ष १४५
- डाक टिकटों में जैन धर्म १४७
- समय का मूल्य १५१
- आनंदी राहणं हा माझा जन्मसिद्ध हक्क १५२
- आभार व्यक्त करना न भूले १६३
- बोधामृतम् १६५
- आलस्य जीवन का महान शत्रु १६७
- जागृत विचार १६८
- सार्वजनिक परिवहन पर बड़ा फैसला १६९
- बिखरे मोती १७१
- चबा चबाकर खाने के है जबरदस्त फायदे १७३
- दु:ख ईश्वर का प्रसाद १७४
- शंका समाधान १७५
- वीतरागी की लगन लगाएँ १७७
- क्या हम जैन विलुप्त होने के कगार पर है १८७
- दुनिया बढनेवाली है १८९
- जैन संस्कृति और बुद्ध संस्कृति १९१
- चार चौकीदार १९३
- सुक्ति से मुक्ति १९५
- धरती पर स्वर्ग बना दुँगा १९७
- ''भारत माता'' पर हुई परिचर्चा १९९
- अरिहंत जागृती मंच – निबंध स्पर्धा २०१
- विश्व नवकार मंत्र दिवस २०३
- SDM डायग्नोस्टिक सेंटर, पुणे २०४
- महावीर जैन विद्यालय, पुणे २०५
- हास्य जागृति २०६
- संचेती ट्रस्ट, पुणे २०७
- श्री गोडवाल जैन श्वे. मू. संघ, पुणे २०९
- आर.एम.डी. फाऊंडेशन, पुणे २१५
- सुरक्षा २१७
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

	एक वर्ष	त्रिवार्षिक
साध्या पोस्टाने	५००	१५००
रजिस्टर मेल पार्सल – पोस्टाने	१०००	३०००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- Google Pay - M. 9822086997

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

सम्पूर्ण जैन दर्शन के पारंपरिक मूल्यों को समझने का दृष्टिकोण

अभय प्रभावना

संग्रहालय एवं ज्ञान केंद्र, पारवडी, पुणे

तीर्थंकर ऋषभदेव

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा निर्देशित व प्रारम्भ की गयी समृद्ध सामाजिक परम्परा, सुरक्षा, संचार व्यवस्था, उद्योजकता, व्यापार-व्यवस्था, कला कौशल व विज्ञान इन आदर्श गुणों पर आधारित है।

सुरक्षित, सक्षम, उत्पादक, विकसित समाज ही मानवता को सभ्य, सुसंस्कृत, शान्तिपूर्ण और संतुलित बना सकता है।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर अंतिम तीर्थंकर महावीर तक सभी तीर्थंकरों की शिक्षाओं का सम्मिलन ही जैन दर्शन व धर्म का सार है।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने मानव सभ्यता की नींव रखी और समाज को प्रमुख सामाजिक तत्त्वों से परिचय करवाया जो निम्न हैं:

- **असि (शस्त्र एवं उपकरण)** – सुरक्षा, संरक्षण एवं उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए शस्त्र एवं उपकरण
- **मसि (स्याही एवं संचार)** – सामाजिक संगठनों के परस्पर जुड़ाव एवं सहयोग को सुनिश्चित करने के लिए संचार
- **कसि (कृषि एवं पशुपालन)** – सभ्य जीवन के लिए आवश्यक भोजन, खाद्य उत्पादों और अन्य सभी विशेष सामग्रियों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कृषि व पशुपालन
- **वाणिज्य (व्यापार एवं वाणिज्य)** – समृद्धि बढ़ाने के लिए स्वयंपूर्ति की आवश्यकता से अधिक उत्पादित सामग्री से व्यापार
- **शिल्प** – व्यावसायिक कुशलता जिससे वस्तुनिर्माण, वाहन निर्माण, वस्त्र निर्माण, धातु उद्योग सफल हो व चित्रकारी, मूर्तिकला, नृत्य, संगीत जो समाज की सांस्कृतिक परम्परा, एवं जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं
- **विद्या** – गणित, चिकित्सा विज्ञान, ब्रह्माण्ड विज्ञान आदि का ज्ञान, तथा
- **विवाह एवं परिवार** की परिकल्पना, जो आज हमारी नैतिकता का आधार है।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ

तीर्थंकर ऋषभदेव के लगभग दो हज़ार वर्ष पश्चात्, जब समाज स्थिर और समृद्ध हुआ, तब तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने मनुष्य के व्यक्तिगत समाधान व मानसिक उत्थापन के लिए इन सिद्धान्तों पर बल दियाः

- **अहिंसा –** मन, वचन एवं काय द्वारा जाने-अनजाने हिंसा से बचना, तथा
- **अपरिग्रह–** अनासक्ति-सम्पत्ति सृजन करना किन्तु उससे अत्यधिक लगाव नहीं रखना।

तीर्थंकर महावीर

तीर्थंकर पार्श्वनाथ के लगभग २५० वर्ष पश्चात् २४वें एवं अन्तिम तीर्थंकर महावीर ने सम्पूर्ण मानव जाति के लिए महत्त्वपूर्ण एवं समावेशी सिद्धान्त दिये जो निम्न हैं:

- **अनेकान्तवाद –** दूसरों के दृष्टिकोण का सम्मान, तथा
- **क्षमा –** व्यक्तिगत एवं सामाजिक तनाव से मुक्ति के लिए क्षमा प्रार्थना और प्रदान करना।
- '**पन्ना समिक्खए धम्मं**' महावाक्य, जो हमें समीक्षात्मक होने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिसमें बताया गया है कि किसी भी विचार या कार्य को सारासार विचार के पश्चात् स्वीकार करना, जब हमें यह विश्वास हो कि यह उचित है, निष्पक्ष है और दूसरों के लिए हानिकारक नहीं है।
- '**परस्परोपग्रहो जीवानाम्**' का स्पष्ट संदेश दिया, जिसके अनुसार पृथ्वी पर सभी जीव एक-दूसरे पर आश्रित हैं, तथा उनकी सुरक्षा पृथ्वी के अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

प्राचीनकाल में जितना महत्त्व प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की शिक्षाओं का था, उतना ही महत्त्व अन्य २३ तीर्थंकरों का है। समग्रता से देखें, तो "**जैन धर्म**" सभी तीर्थंकरों की शिक्षाओं का समन्वय है जो प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह सांसारिक हो अथवा आध्यात्मिक हो, के सतत् एवं सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है।

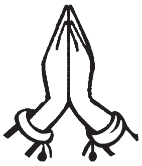

तीर्थंकर महावीर का पुरुषार्थ

लेखक : श्री विमलकुमार चोरड़िया

आत्म-द्रव्य की अपेक्षा से सिद्धों की आत्मा और संसारी जीवों की आत्मा में कोई अन्तर नहीं है। सिद्धों की मुक्त आत्मा कर्मावरण रहित है, संसारी जीवों की आत्मा कर्मावरण सहित है। छोटे-से जीव की आत्मा कर्मावरण सहित है। छोटे-से जीव की आत्मा हो, चाहे हाथी की या किसी तपस्वी की आत्मा हो - आत्मा की अपेक्षा से कोई अन्तर नहीं है। अन्तर आता है अपने द्वारा उपार्जित कर्मों के आवरण से अथवा अपने पुरुषार्थ से कर्मावरण रहित होने पर।

भगवान महावीर की आत्मा भी हमारी आत्मा की तरह अनादिकाल से चौरासी लाख जीव योनियों में भटकी, किन्तु भगवान महावीर के श्वेताम्बर मान्यता के अनुसार २७ भव पूर्व और दिगम्बर मान्यतानुसार ३३ भव पूर्ण नयसार/पुरुरवा के भव में, अनुकम्पा तथा आस्तिक्य गुणों के कारण, सन्तों के प्रतिबोध से जब जीव (आत्मा) और शरीर (अजीव) का भेद-ज्ञान हुआ, चेतनता और उपयोगवीर्य आदि गुणों के कारण, आत्म प्रदेशों पर कर्मों के बन्ध रूप होने का ज्ञान हुआ, नये कर्मों को आने से रोकने की विधि-संवर का ज्ञान हुआ, संचित कर्मों से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है - उस निर्जरा की विधि का ज्ञान हुआ, कर्मों से छुटकारा होने पर व्यक्ति का संसार में आवागमन समाप्त हो जाता है - उसे मोक्ष मिल जाता है - यह ज्ञान हुआ, मोक्ष के अनन्त, अव्याबाध सुख का ज्ञान हुआ तो उनके मन में मोक्ष की तीव्र अभिलाषा जाग्रत हो गई - उनका संवेग गुण प्रकट हुआ।

इसके बाद उनकी जीवन-शैली बदल गई। हालाँकि उनका सम्यकत्व (उपरोक्त प्रतिबोध से) उपशम, क्षयोपशम वाला था, फिर भी उनकी मोक्षाभिलाषा दृढ़ होने से लक्ष्य स्पष्ट था। अनादिकालीन संज्ञाओं-कषायों के कारण उनके विश्वास पर आवरण आ जाता था, वह कभी धूमिल हो जाता था। किन्तु उनकी तीव्र अभिलाषा व उनके पुरूषार्थ के कारण महावीर स्वामी के भव में वह क्षायिक हो गया। महावीर स्वामी के भव में अपने पुरूषार्थ से आत्मा का व शरीर-संसार का भेद-ज्ञानकर, नये कर्मों के आने से रोककर पूर्व-संचित कर्मों की निर्जरा कर, केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया।

२७ भव पूर्ववाले नयसार के जीव ने अपने प्रबल पुरुषार्थ से ऐसा पुण्योपार्जन किया कि वे धर्मप्राण भरत क्षेत्र के बिहार-झारखंड प्रान्त में भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा को माननेवाले राजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला की रत्नकुक्षी से, ईस्वी सन् ६०४ वर्ष पूर्व चैत्र सुदी १३ को जन्में। जन्म के समय उनके शरीर से निकली अगोचर तरंगों ने इन्द्र का आसन कंपायमान कर दिया। इन्द्र एकदम चौंके। ध्यान लगाने पर- भगवान महावीर का जन्म हुआ है - यह जानकर तीर्थंकर के जीव के लिए इन्द्र द्वारा जो-जो कार्य किए जाने थे, वे किए, जन्मोत्सव मनाया।

राजा सिद्धार्थ के यहाँ गणनायक, दण्डनायक, युवराज मंत्री, महामंत्री, गणक, अमात्य, पीठ मर्दक, सेनापति, सार्थवाह, दूत, संधिपाल, श्रेष्ठी आदि अनेक पदाधिकारी थे, बड़ा महल था। सैकड़ों दास-दासी थे। राजपुत्र होने के नाते महावीर को किसी प्रकार के भौतिक सुख के साधनों का अभाव नहीं था। रत्नजड़ित पादुकाएँ पहनते थे । बहुमूल्य वस्त्रअलंकार धारण करते थे, भोगोपभोग की समस्त सामग्री उपलब्ध थी।

क्षत्रियकुल में जन्म लेने के कारण उनमें क्षात्र-तेज, पुरुषार्थ, कर्तव्य, दृढ़ता, सहिष्णुता की कमी नहीं थी। भरापूरा परिवार था। इतना होने पर भी यौवनावस्था में भोगोपभोग की सामग्री को छोड़कर, बहुमूल्य वस्त्रालंकारों को त्यागकर क्यों विचरण करने लगे? रत्नजड़ित पादुकाओं को त्यागकर, नंगे पैर क्यों भ्रमण करने लगे? परिवार, दास-दासियों को छोड़कर एकाकी क्यों रहने लगे? आहार की स्वादिष्ट सामग्री छोड़कर निराहार क्यों रहने लगे अथवा भिक्षाचर्या से क्यों पोषण लेने लगे? महल छोड़कर एकान्त वन-खंडहरों में, श्मशान भूमि या वृक्ष के नीचे क्यों रहने लगे? जिनकी तरफ कोई अंगुली भी उठा नहीं सकता था, उनकी ताड़ना-तर्जना हुई, कान में कीले ठोके गए-उसका उन्होंने प्रतिकार नहीं किया अपितु उसे समत्व-भाव क्षमा-भाव से क्यों सहन किया? यह सब किया उन्होंने 'नयसार' के भव में मोक्षाभिलाषा के तीव्र संवेग के कारण। उनको स्वयं को मोक्ष पाना था तथा आत्म-जिज्ञासुओं को मोक्ष कैसे पाया जा सकता है, संसार का स्वरूप क्या है -आदि समाधान देना था।

इसके लिए भगवान महावीर ने नौ सत् भूत तत्व बताए-

जीवाऽजीवा य बन्धो अ पुण्णं, पावासवो तहा
संवरो निज्जरा मोक्खो, सन्ते ए तहिआ नव ।।

- जीव, अजीव, बन्ध, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा और मोक्ष - ये नौ सत्भूत तत्व हैं।

जैन दर्शन ने आत्म तत्व-जीव (Soul) को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है। आत्म तत्व की पूर्ण विकसित अवस्था को ही ईश्वरत्न माना गया है। ईश्वरत्व-प्राप्ति के बाद आत्मा पूर्ण रूप से कृत-कृत्य तथा विमलतम स्थितिवाला हो जाने से जन्म-मरण आदि रूप भौतिक हस्तक्षेप से एवं तज्जनित विविध संसार चक्र रूप घटमाल से सर्वथा व सदैव के लिए मुक्त हो जाता है।

संसारी आत्मा अनादिकाल से उसी प्रकार मलिन है, जैसे स्वर्ण की खदानों का स्वर्ण मलयुक्त है, उसका पुरुषार्थ से शुद्ध स्वर्ण बनता है।

आत्मा तो अनादि, अविनाशी, अक्षय, ध्रुव, नित्य और शाश्वत है। ज्ञान-दर्शन तो निश्चय से तथा चारित्र, तप, वीर्य और उपयोग से जीव के लक्षण हैं। चेतना जीवन को जानने, देखने अनुभव करने की शक्ति है। इसी शक्ति के कारण जीव, प्रमाद, कषाय अनादिकालीन संज्ञाओं के कारण जड़ के निमित्त से कर्त्ता बनता है, सुख-दुःख का वेदन करता है, भिन्न-भिन्न योनियों में भ्रमण करता है और सुख-दुःख का भोक्ता बनता है।

इसके विपरीत अजीव में उपर्युक्त शक्तियाँ नहीं है। महावीर स्वामी ने बताया-अजीव तत्व के पाँच भेद हैं - १. **पुद्गलास्तिकाय-**रूपी है, इसमें स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण है। जीव और पुद्गल के संयोग से संसार में अजब-गजब के कार्य हो रहे हैं। चेतन के परिणामी स्वभाव के कारण ही भिन्न-भिन्न प्रकार के कर्मों की कार्मण-वर्गणाएँ आत्म-प्रदेशों से चिपकती हैं जिसके फल से भिन्न-भिन्न योनियों में पुण्य-पाप के फलस्वरूप भव-भ्रमण होता रहता है-जन्म-मरण चलता रहता है। इसमें सहायक होते हैं अजीव तत्व के **आकाशास्तिकाय**-जो अवगाहन देता है, **धर्मास्तिकाय**-जो गति में सहायक होता है, **अधर्मास्तिकाय**-जो स्थिर रहने में सहायक होता है तथा **काल**-जो परिवर्तन करता है, वस्तु का विपाक करता है, कर्मों का विपाक करता है जिसे आत्मा वेदन करती है।

महावीर स्वामी ने इसकी अनुभूति करके, नये कर्मों का आत्मप्रदेशों से बन्धन न हो, इसके लिए कर्मों के आने के कारणों को (आश्रव को) जाना। उन्होंने बताया कि कर्म आने के कारण हमारी पाँचों इन्द्रियों में असंयम, चार कषाय, प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह में नियम का अभाव, मन-वचन-काया के योग में असंयम तथा हमारी मिथ्या

मान्यताओं - अज्ञान, अहंकार आदि के कारण, २५ क्रियाओं के कारण कर्मों का आश्रव होता है। इन आश्रव के कारणों का जीव को अनादिकालीन अभ्यास है अतः उसको रोकने के लिए प्रभु ने संवर तत्व बताया।

संवर तत्व में सर्वप्रथम अपनी प्रवृत्ति जयणा से करने के लिए कहा गया है। दूसरे क्रम में पाँच समितियों और तीन गुप्तियों के माध्यम से शुभ कार्यों में प्रवृत्ति एवं अशुभ कार्यों से निवृत्ति के लिए कहा है। संवर तत्व में तीसरा क्रम है - आनेवाले कष्टों-परीषहों को समभाव से सहन करने का। भगवान महावीर का जीवन इन परीषहों को समभाव से सहन करने की घटनाओं से भरा पड़ा है। तत्पश्चात् दस प्रकार से धर्म पालन का निर्देश दिया गया है। इसके आगे कर्मों के आगमन को रोकने के लिए अनित्य, अशरण आदि १२ प्रकार की भावनाएँ भाने का मार्ग-दर्शन दिया है। इसके साथ संवर तत्व को पुष्ट करने के लिए सर्व सावद्य व्यापार का त्याग करके निर्दोष जीवन जीने के लिए सामायिक, छेदोपस्थापनीय आदि पाँच चारित्रों का उल्लेख मिलता है। संवर तत्व से नए कर्मों का आना बंद हो जाता है।

पूर्व संचित कर्मों को दूर करने के लिए उन्होंने निर्जरा तत्व बताया, जो उन्होंने अपने जीवन में आचरित भी किया। इसके लिए छह बाह्य एवं छह आभ्यन्तर तप बताए।

प्रभु महावीर ने अपने जीवन में कर्मों की निर्जरा के लिए उग्र तप किया, उसका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है - १. एक छहमासी तप, २. एक पाँच दिन कम छहमासी तप, ३. नौ चातुर्मासिक तप, ४. दो त्रिमासिक तप, ५. छह द्विमासी तप, ६. दो सार्धमासिक तप, ७. बारह मासिक तप, ८. बहत्तर पाक्षिक तप, ९. एक भद्रप्रतिमा दो दिन, १०. एक महाभद्रप्रतिमा चार दिन, ११. एक सर्वतोभद्रप्रतिमा दस दिन, १२. दो सौ उनतीस छट्ठ तप.

साधना काल में महावीर स्वामी ने ४५१५ दिनों में केवल ३४९ दिन आहार ग्रहण किया तथा ४१६६ दिन निर्जल तपश्चरण किया। अभिग्रह और रस परित्याग, वृत्ति संक्षेप के लिए चन्दनबाला के हाथों ५ माह २५ दिन बाद उड़द के बाकुले से पारणा करना सर्वविदित है।

इस प्रकार भगवान महावीर ने अपने पुरुषार्थ से संवर तत्व का आचरण कर नए कर्मों को आने से रोका तथा उग्र तप करके संचित कर्मों की निर्जरा करके साधना के १२ वर्ष ६ माह पूर्ण हो जाने पर जंभिय ग्राम के निकट ऋजुबालुका नदी के किनारे, शाल वृक्ष के नीचे, गोदोहिका आसन में आतापना ले रहे थे तब वैशाख सुदी १० के दिन अन्तिम प्रहर में छट्टम भत्त की तपस्या की स्थिति में क्षपक श्रेणी पर आरोहण कर, शुक्ल ध्यान के द्वितीय चरण में मोहनीय, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय व अन्तराय, इन चार घाती कर्मों का क्षय किया और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के योग में केवलज्ञान, केवलदर्शन प्रकट किया।

महावीर स्वामी के प्रबल पुरुषार्थ से, उनके उग्र तप से प्रभावित होकर कल्पसूत्र में भद्रबाहु स्वामी ने उल्लेख किया है-

वे कांसे के पात्र की तरह निर्लेप थे, शंख की तरह निरंजन (रागरहित), जीव की तरह अप्रतिहत गतिवाले, आकाश की तरह अवलंबन रहित, वायु की तरह अप्रतिबद्ध, शरद ऋतु के जल की तरह निर्मल, कमलपत्र की तरह निर्लेप, कच्छप की तरह इन्द्रिय संकोचनवाले, गेंडे की तरह राग-द्वेष से रहित-एकाकी, पक्षी की तरह अनियत विहारी, भारण्ड पक्षी की तरह अप्रमत्त, हाथी की तरह शूर, वृषभ के समान पराक्रमी, सिंह की तरह दुर्द्धर्ष, सुमेरु की तरह परीषहों को सहन करने में अचल, सागर की तरह गंभीर, चन्द्रमा के समान सौम्य, सूर्य के समान ओजस्वी, स्वर्ण की तरह कांतिमान, पृथ्वी की तरह सहिष्णु, अग्नि के समान जाज्वल्यमान तेजस्वी थे।

भगवान के ग्यारह गणधर थे। उन्होंने चतुर्विध संघ की स्थापना की। भगवान की देशना से आगम भरे पड़े हैं। उन्होंने अपने पुरुषार्थ पूर्ण जीवन से यही संदेश दिया कि तुम स्वयं के पुरुषार्थ से अपने नाथ बनो, दूसरे किसी से आशा मत रखो कि वह नाथ बना देगा। कोई भी जीव अनादि सिद्ध नहीं है। प्रत्येक प्राणी अपने पुरुषार्थ से परमात्मा बन सकता है। पुरुषार्थ जीवन का अमृत है, सफलता का मूल-मंत्र पुरुषार्थ है। भाग्यवाद की नशीली गोली ने मनुष्य को आलसी, अकर्मण्य और निष्क्रिय बना दिया है।

यदि भगवान महावीर की तरह ध्रुव, अनादि निधन, शिव, अचल, अरूज, अनन्त, अक्षय, अव्याबाध, अपुनरागमन रूप सिद्धि-मुक्ति एवं स्थिति को प्राप्त करना हो तो भगवान महावीर की तरह पुरुषार्थ करना होगा। भगवान महावीर का गुणगान करना तभी सार्थक रहेगा जब हम इस दिशा में पुरुषार्थ प्रारम्भ करें और अपना मोक्ष मार्ग प्रशस्त करने का प्रयत्न करे। •

कव्हर तपशील - एप्रिल २०२५

- ❖ भगवान महावीर स्वामी २६२४ का जन्म कल्याणक महोत्सव १० एप्रिल २०२५ रोजी सर्वत्र उत्साहात साजरा केला जाणार आहे.
- ❖ 'जितो' तर्फे ९ एप्रिल २०२५ रोजी ''विश्व नवकार महामंत्र दिवस'' म्हणून संपूर्ण जगात, भारतात साजरा केला जाणार आहे. या दिवशी सकाळी ७.०२ ते ९.३६ या वेळेत एस. पी. कॉलेज, पुणे येथे नवकार महामंत्र जापचे भव्य आयोजन पुणे जितोने केले आहे.
(बातमी पान नं. २०३)
- ❖ **अभय प्रभावना – संग्रहालय व ज्ञान केंद्र**
जैन तत्वज्ञान व भारतीय वारसाची माहिती सांगणारे ''अभय प्रभावना'' संग्रहालय व ज्ञान केंद्रास प्रत्येकाने सहपरिवार अवश्य भेट द्यावी.
(लेख पान नं. ३५ ते ४४)
- ❖ **महावीर जैन विद्यालय, पुणे**
महावीर जैन विद्यालय पुणे येथील मुलाच्या नूतन वसतीगृहाचे उद्घाटन ९ मार्च २०२५ रोजी संपन्न झाले. (बातमी पान नं. २०५)
- ❖ **पू. आ. श्री. नित्यानंदसुरीश्वरजी म. सा.**
पू. आ. श्री. नित्यानंदसूरीश्वरजी म. सा. यांचा श्री. गोडवाल जैन श्वेतांबर मू. पू. संघ द्वारा 'राष्ट्रसंत' पदवीने सन्मान करण्यात आला.
(बातमी पान नं. २०९)
- ❖ **पारस उद्योग समुह – अहिल्यानगर**
अहिल्यानगर येथील पारस उद्योग समुहाला राज्यपाल हस्ते सन्मानीत करण्यात आले.
(बातमी पान नं. ११८)
- ❖ **SDM डायग्नोस्टिक सेंटर – उद्घाटन**
पिंपळे निलख, पुणे येथील SDM डायग्नोस्टिक सेंटरचे ९ मार्च २०२५ रोजी उद्घाटन झाले.
(बातमी पान नं. २०४)
- ❖ **आर. एम. डी. फाऊंडेशन – रक्तदान शिबीर**
माणिकचंद ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीजचे सर्वेसर्वा श्री. रसिकलालजी एम. धारीवाल यांचा जन्मदिन १ मार्च रोजी भव्य रक्तदान शिबीराने साजरा करण्यात आला. (बातमी पान नं. २१५) •